अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

अध्यात्म जगत के गुरु के चरणरज को पाकर पावन हुआ बी.एस.एस. गुरुकुलम

-प्रखर धूप और आतप में अखण्ड परिव्राजक आचार्यश्री महाश्रमणजी का प्रलम्ब विहार

-कुल लगभग पन्द्रह कि.मी. का विहार कर आचार्यश्री पहुंचे बी.एस.एस.एच.एस. स्कूल

-विद्यार्थियों, शिक्षकों व प्रबन्धन से जुड़े लोगों ने किया भावभीना स्वागत

-आचार्यश्री ने ज्ञान का बताया महत्त्व, ज्ञान प्राप्ति के बाधाओं से दूर रहने को किया प्रेरित

22.02.2019 अलथुर, पालाक्कड (केरल): अपनी केरल यात्रा के दौरान शुक्रवार को जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, अहिंसा यात्रा के प्रणेता अपनी अहिंसा यात्रा के साथ उस गुरुकुलम में पधारे, जिसकी नींव तेरापंथ धर्मसंघ के नवमाधिशास्ता गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी के शुभागमन के समय पड़ी थी। आज बी.एस.एस. गुरुकुलम हायर सेकेण्ड्री स्कूल में मानों उत्सव-सा माहौल था। प्रबन्धन से जुड़े लोगों से लेकर शिक्षक-शिक्षिकाओं व बच्चों में विशेष उत्साह देखने को मिल रहा था।

शुक्रवार को प्रातः केन्नडी हायर सेकेण्ड्री स्कूल से मंगल प्रस्थान किया। आचार्यश्री आज प्रलम्ब विहार के लिए गतिमान थे। सुबह में चल रही हवाओं ने मौसम को कुछ शीतलता प्रदान करने का प्रयास किया, किन्तु सूर्य के किरणों की तीव्रता ने ही मानों संपूर्ण शीतलता को निगल लिया और पूरी धरती तवे के समान जलने लगी। इस फरवरी महीने में केरल की धूप उत्तर भारत के लोगों को मई-जून के धूप की तरह लग रही थी। हालांकि आज सूर्य विहार मार्ग के पीछे की ओर था, किन्तु उसका आतप सभी को पसीने से नहला रहा था। ऐसे में दृढ संकल्पी आचार्यश्री प्रलम्ब विहार के लिए गतिमान थे। रास्ते में पलाक्कड पुलिस थाने के अनेक सिपाहियों ने करबद्ध आचार्यश्री के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। रास्ते में आने वाले अनेक गांवों के ग्रामीणों को अपना मंगल आशीष प्रदान करते आचार्यश्री लगभग पन्द्रह किलोमीटर का प्रलम्ब विहार कर अलथुर स्थित बी.एस.एस. हायर सेकेण्ड्री स्कूल के प्रांगण में पधारे। स्कूल के मुख्य द्वार पर विद्यालय प्रबन्धन से जुड़े लोग, शिक्षक-शिक्षिकाएं और सैंकड़ों विद्यार्थियों ने अपने जयघोषों के माध्यम से आचार्यश्री का भावभीना स्वागत किया।

स्कूल परिसर में स्थित एक हाॅल में आयोजित मंगल प्रवचन में आचार्यश्री ने समुपस्थित बी.एड. शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों और शिक्षक-शिक्षिकाओं सहित श्रद्धालुओं को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आदमी के जीवन में ज्ञान का परम महत्त्व होता है। दुनिया में ज्ञान जैसा पवित्र चीज कोई नहीं। ज्ञान से प्रकाश मिलता है। विद्या संस्थान मंदिर के समान होते हैं, जहां विद्या की आराधना होती है। विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों के साथ अध्यात्म की विद्या भी कुछ अंशों में प्राप्त हो तो उनकी विद्या पुष्ट बन सकती है और उनके जीवन का कल्याण हो सकता है। अध्यात्म विद्या से चेतना पुष्ट होती है। यदि कोई व्यक्ति 72 कलाओं से परिपूर्ण हो और वह धर्म की कला और जीवन जीने की कला नहीं जानता तो उसे अज्ञानी ही कहा जा सकता है। ज्ञान के अभ्यास में अहंकार, गुस्सा, प्रमाद, रोग और आलस्य ये पांच बाधाएं होती हैं, जो ज्ञानाराधना में बाधक बनती हैं। ज्ञानार्थी को इन पांचों से बचने का प्रयास करना चाहिए। शिक्षक विद्यार्थियों को अपने व्यवहार से अच्छे आचार, व्यवहार, विचार, संस्कार आदि भी प्रदान कर सकते हैं। आचार्यश्री की प्रेरणा से उपस्थित शिक्षक-शिक्षिकाओं व विद्यार्थियों ने अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प स्वीकार किए।

आचार्यश्री के मंगल प्रवचन से पूर्व साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने भी उपस्थित लोगों को पावन प्रेरणा प्रदान की और इस विद्यालय के इतिहास में जुड़े आचार्य तुलसी के समय के प्रसंग का भी वर्णन किया। अपने स्कूल प्रांगण में आचार्यश्री के आगमन से हर्षित गुरुकुलम प्रबन्धन की ओर से बी.एड. काॅलेज की प्रिंसिपल डाॅ. बालम्बिका तथा बी.एस.एस. हायर सेकेण्ड्री स्कूल के प्रिंसिपल डाॅ. विजयन वी. आनंद ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी और आचार्यश्री से पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। आचार्यश्री के आगमन से हर्षित गुरुकुलम प्रबन्धन के लोगों ने आचार्यश्री की मंगल सन्निधि में एक और आॅडिटोरियम की नींव रखी और आचार्यश्री से पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।